योग्यता

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका

समकालीन साहित्य में मानव मूल्य

ज्ञान - विज्ञानं विमुक्तये

UGC Sponsored F.D.P

कार्यकारी संपादक :
डॉ. हरि राम प्रसाद पसुपुलेटी

गौरव संपादक :
डॉ. सि. कृष्ण

Volume : 5 Special Edition : January - March 2019 ISSN : 2348 - 4225

- Social Sciences • Humanities
- Commerce & Management
- Language and Literature
- Law • Art • Development Studies

Yogyatha

International Referred Research Journal

Editor : Dr. D. Satya Latha

Yogyatha Publications

समता ज्ञान प्रतिष्ठा

International Referred

अनुक्रम

कम सं	विषय	नाम
1	अंबेडकरवादी साहित्य और मानवमूल्य	जयप्रकाश कर्दम
2	समकालीन हिन्दी साहित्य में मानवमूलय	आचार्य आर एस सर्रराजु
3	व्यंग्य की आकामकता वनाम भ्रष्टाचार	आचार्य आई एन चंद्र शेखर रेडडी
4	रधुवीर सहाय की कविताओं में मानवमूल्य	आचार्य एस ए एस एस एन वर्मा
5	समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में सामाजिकन्याय	आचार्य एन सत्यनारायण
6	हिन्दी तेलुगु दलित कविता में प्रस्तावित सामाजिकन्याय	डॉ जि वी रत्नाकर
7	समकालीन साहित्य में मानवमूल्य	डॉ जयशंकरवावु
8	समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में मानवमूल्य	डॉ के नगेश्वरराव
9	सामाजिक सहयोग केलिए तडपती कामकाजी नारी	डॉ पम्स अख्तर
10	देवी उपन्यास में मानवमूल्यों का समर्थन	डॉ के कृष्णा
11	डॉ शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में चित्रित सामाजिकन्याय	वै वेंकटलक्ष्मि
12	समकालीन हिन्दी कविताओं में अभिव्यक्त मानवमूल्य	डॉ पि के जयलक्ष्मि
13	भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का स्थान	डॉ के श्याम सुन्दर
14	हिन्दी साहित्य में मानवमूल्य	ए विजयश्री
15	साहित्य और सामजिक समस्याएँ	डॉ एच अरूणा
16	नासिरा शर्मा के उपन्यासों में धार्मिक समन्वय	डॉ एस सूर्यावति
17	भारतीय संस्कृति की संवहिका हिन्दी	डॅ टि सुमति
18	डॉ अंबेडकर ः दलित और वौध्द धर्म में चित्रित दलित चेतना	डॉ इबरार खान
19	भ्रतृहरि नीति शतके जीनवमूल्यानि	डॉ के वि आर वि वि लक्ष्मि
20	पंचकावेषु समकालीन साहित्याचे व्यक्तित्व निर्माणस्च परिशीलनम	के दिनेश
21	सुसहत भारतम	डॉ पी श्रीवल्ली
22	ठंडा लोहा में अभिव्यक्त मानवमूल्य	अचार्य एस वि एस एस एन राजु
23	मन्नू भंडारी की कहानीयों में मानवमूल्य	डॉ डि नगेश्वरराव
24	समकालीन उपन्यासों में सामाजिक न्याय	डॉ सहिरा बानो
25	मानवमूल्य का स्वरूप	डॉ पी हरिराम प्रसाद - डॉ टि राजशेखर
26	लडाई ः भ्रष्टाचार विरोध - बनाम मानवमूल्य	डॉ प्रतिभा जी एमेकर
27	दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना के संदर्भ	डॉ वि सरोजिनी
28	समकालीन हिन्दी कहानीयों में मानवीय संबंध	डॉ एस के बेनजीर

साहित्य और सामाजिक समस्याएँ

भूमिका : [1] साहित्य से हमारा अभिप्राय हित चिन्तन से है। इसमें विश्व कल्याण की भावना निहित होती है, पर आज साहित्य शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। साहित्य शब्द की व्याख्या करने से साहित्य के दो क्षेत्र सामने आते हैं एक व्यापक और दूसरा संकुचित। वाणी विस्तार और शब्द भण्डार की सीमा में आनेवाली प्रत्येक वस्तु साहित्य है। संकुचित अर्थ में साहित्य काव्य का पर्यापवाची हैं। साहित्य का व्यापक अर्थ उसकी उत्पत्ति पर और संकुचित अर्थ रूढ़ि पर आधारित है।

साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त विशाल है। मानव जीवन की विशालता ही साहित्य क्षेत्र की सीमा है। इस दृष्टिकोण से मानव अति महान है। अतः साहित्य की सीमाएँ भी अत्यंत विस्तुत हैं, उसमें काव्य, शास्त्र, इतिहास, पुराण, राष्ट्रप्रेम आदि सभी का समावेश होता है। साहित्यकार में कवि के अतिरिक्त अन्य भी अनेक गुणों का होना आवश्यक है।

मनुष्य की भीड़ को उसी तरह समाज नहीं कहा जा सकता जैसे सब्जियों या अनाज के एकत्रित सव्यूह को देर कहा जाता है कि पर समाज नहीं। वास्तव में समाज मनुष्यों के उस छोटे–बड़े समूह को कहा जाता है कि जो भावनात्मक स्तर पर आपस जुड़ा हुआ रहता है। उसके सुख–दुःख, उत्सव, त्योहार आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम, रीति–रीवाज परंपराएँ और नीतियाँ आदि सभी कुछ सम्मिलित हुआ करती हैं। यहाँ तक कि उनके हानि–लाभ में भी कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं हुआ करता। इस प्रकार की उन्नत परंपराओं, समृद्ध और उन्नत मन–मस्तिष्क भावृक समाज की ज्ञान, विज्ञान कला आदि के क्षेत्रों में जो अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ स्वीकार की गई हैं, साहित्य उन सब में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ स्वीकार की गई हैं, साहित्य उन सब में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ स्वीकार किया गया है। साहित्यकार कयोंकि समाज का ही हमेशा सजीव–सतर्क रहनेवाला भावृक किस्म का अंग होता है, इस कारण जीवन–समाज में जो कुछ भी छोटा–बड़ा, अच्छा–बुरा घटित हुआ करता हे, उसकी भावृक सम्वेदना उसे अवश्य ग्रहण करती और उसकी गहराई तक जाने का प्रयास किया करती है। सामान्य जनप्रायः ऐसी–ऐसी तो क्या, बड़ी–बड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं के घटित हो जाने के बाद प्रायः भूल जाया करता है। दूसरी और कवि–साहित्यकार उसी सब को अपने

मन मस्तिष्क में पचा–पका कर अपनी साहित्यिक विधा (कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, डैरी, आत्मकथा आदि) के रूप में प्रकट किया करता है। इस प्रकटीकरण की प्रक्रिया से साहित्य और समाज का सम्बन्ध स्वयं ही प्रभावित हो जाता है। जीवन और समाज दोनों का जन्म जात स्वभाव गतिशील और विकासशील रहा करता है। साहित्य और साहित्यकार भी अपने स्वभाव से कुछ ऐसा ही कार्य किया करते हैं। वे जीवन–समाज की धारा में बहकर आ गए कुशीनियों, अनाचारों, आडम्बरों आदि कचरों का निराकरण का प्रयास निरन्तर करते रहा करते हैं। फलतः सामाजिक कुरीतियों, अन्य तरह के निद्रूयों को जड़–मूल से उठा या उखाड फेंकने का प्रयास ने किया जाए, तो समाज भी भीतर–ही–भीतर से सड़ गल कर एक निरंतर बहते रहने वाला गठित कोढ़ बन जाया करता है। सो सजग–सजीव साहित्यकार हमेशा इस बात के लिए प्रयत्नशील रहा करता है कि समाज की बुराइयाँ और विडम्बनाएँ दबने न पाएँ। तब वह कोरे आदर्श का दामन छोड़कर धोर यर्थार्थ का फावड़ा अपनाकर उन कुरीतियों–बुराइयों को जड़ मल से उखाड़ फेंकने का प्रयास करते हैं। साहित्य और साहित्यकार को समाज का अगुवा एवं नेतृत्व करनेवाला कहा है।

जिस युग में समाज और जीवन जिस प्रकार का हुआ करता है, साहित्यकार के अपने जीवन और उसके आस–पास जैसी परिस्थितियाँ मिला करती है, वह उन्हीं के अनुरूप ही साहित्य का सृजन किया करता है, ऐतिहासिक क्रम से दृष्टिपात करने पर यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है। संसार के साहित्य में आदि ग्रन्थ माने जाने वाले ऋृगवेद के रचना काल में मानव–समाज का जीवन पूर्णतया प्रकृति और उसके विभिन्न स्थूल सूक्ष्म तत्वों एवं पदार्थों पर आश्रित है। सो कवि ने अपनी आश्रयदात्री, सब प्रकार से समर्थ और सुरक्षा प्रदान करनेवाली प्रकृति एवं उसके भिन्न रूपों का गायन ही उस समय रचे गए साहित्य में किया। उषा, सूर्य, चाँद, सितारे, नदियाँ, पर्वत, तरह–तरह के वृक्ष आदि सब प्रकृति के ही तो उपयोगी रूप हैं। इसके बाद जीवन समाज में जैस–जैसे विकास होता गया, नित नए परिवर्तन आते गए। साहित्यकारों का मानसिकता भी बदलती गई और साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन आता गया। बुद्ध मत का प्रभाव बढ़ा तो बौद्ध साहित्य का तत्कालीन पालि भाषा में सृजन हुआ (वीरगाथा काल : सम्वत् 1050 से 1375) में पहुँचते हैं, तो क्योंकि युग लड़ाई–झगड़ों और

युद्धों का था, सो इस काल खण्ड में इसी प्रकार का साहित्य रचा गया, यद्यपि अन्य (भक्ति, श्रृंगार, नीति) प्रकार की सृजन प्रक्रिया भी जीवन समाज के शिक्षण के लिए निरंतर चलती रही। आगे चलकर परिस्थितियों के परिवर्तित प्रभाव से भक्ति–साहित्य, रीतिकाल के सम्भ्रान्त वर्ग के विलास वासना लिप्त हो जाने के कारण श्रृंगार साहित्य रचा जाता रहा। आगे चलकर सन् 1857 की असफल जनक्रान्ति से राष्ट्र–जागरण और स्वतंत्रता प्राप्ति का जो क्रम चला, साहित्यकारों ने उस सब का उचित निवहि किया। आज का साहित्यकार भी अपनी चेतना में अपने सामाजिक दायित्वों का सम्पूर्ण निर्वाह कर रहा है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन–समाज की नब्ज को पहचानकर सच्चा साहित्यकार हमेशा अपने सामाजिक दायित्वों का उचित निर्वाह करता आया है। वह कभी सहन नहीं कर सका कि खानों को मिलता दूध और मानव सन्तानों भूख से बिलखती रहें। नहीं, ऐसा सहन न कर पाने के कारण ही उसने (पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने) चुनौती भरे स्वरों में युग के साहित्यकारों को ललकारते हुए कहा–

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिस से उथल–पुथलमच जाए।"

उथल–पुथल मचाना चाहता है कवि। जीवन–समाज में आ गई बुराइयों को मिटाकर, एक सुखद शान्त जीवन समाज की रचना करके वह अपना उत्तरदायित्व निभा सके।

उपसंहार :– मनुष्य का जीवन अनेक प्रकार की कठिनाइयों, समस्याओं और प्रश्नों से भरा हुआ है। वह 1. अपने आपको नाना रूपों में अभिव्यक्त करना चाहता है। 2. अन्य लोगों के करने धरने में रस लेता है। 3. अपने इर्द–गिर्द की वास्तविक दुनिया को समझना चाहता है। 4. कल्पना द्वारा एक ऐसी दुनिया का निर्माण करने में रस पाता है जो वास्तविक दुनिया के दोषों से रहित हो। (साहित्य सहचर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. सं. 4) जीवन और समाज को चलाने के लिए प्रत्येक मनुष्य को कुछ–न–कुछ करना पड़ता है। कोई मनुष्य क्या कर सकता है उसकी रूचि और शक्ति क्या कर सकने की है, इसकी जानकारी उपयोगी या ज्ञान का साहित्य पढ़कर ही उस प्राप्त हुआ करती है। मनुष्य ईश्वर की ही सृष्टि है। किन्तु साहित्य

मनुष्य की सृष्टि है। इसीलिए हिन्दी भाषा के भाक्तिकाल के प्रमुख ज्ञानमार्गी शाखा के कबीर दास जी समाज को सुधारने के लिए कई ऐसी दोहों को सृजन किया ताकि समाज में निहित समस्याओं को कहीं–न–कहीं दूर कर सके। साहित्य समाज का दर्पण माना गया है।

आधुनिक काल के प्रसिद्ध कवि रामधारि सिंह दिनकर अपनी प्रसिद्ध कविता 'हिमालय' में अँग्रेजों के विरूद्ध में उनकी नीति अपनाने की बात पर समर्थन करते हुए कहा हैं कि –

"रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ

जाने दे उसको स्वर्ग धीर।"

कवि दिनकर कह रहे हैं कि युधिष्ठिर के स्थान पर गाण्डीवधारी अर्जुन और गादाधारी भीम को लौटा देने का अनुरोध किया है ताकि देश के द्रोहियों और अत्याचारियों से हिसाब–किताब बराबर किया जा सके। [1] इसीतरह प्रेमचन्द के उपन्यास गोदान में ग्रामीण समस्याओं को लेकर कई सांस्कृतिक धर्म–निरपेक्ष धारणाओं का उजागर किये गये हैं। इसमें वर्तमान में स्थित किसानों की आम्हत्याओं के मनुष्य कारण भी दिखाया गया है। आज सामाजिक स्थितियाँ बहुत बिगड़ गया है इसका वर्णन भी 'गोदान' उपन्यास के ज़रिए हमें बहुत खूब समझ सकते है। मद्यपान, जुआ, तकनीकी गलत इस्तेमाल, स्त्रीयों पर अत्याचार अमंक वाद आदि आज के समाज में निहित समस्याएँ हैं जो अकसर हमें साहित्य के सभी विधाओं में कहीं–न–कहीं उपलब्ध हो रही है।

संदर्भ :–

1. हिन्दी निबन्ध माला, पुस्तक का लेखक, प्रो. श्री शरण, पृ. सं. 12, 13, 14, 18, 19, 23.

डॉ. अरूण हेरेमत,
विभाग अध्यक्षा,
एल. वी. डी. कॉलेज,
रायपूर, कर्नाटक राज्य,
दूरभाषा : 08277622133

ISSN : 2348 - 4225

Dr. KRISHNA CHAPPIDI, M.Sc. Tech., N.E.T., P.G.D.C.A., Ph.D.,
Principal
Pithapur Rajah's Government College (A)
KAKINADA - 533 001.

Dr. Krishna, played import rules from 1991 as Senior Lecturer, Reader in the department of Geology. He published more than 50 articles in national and international journals and conferences. He received Best Teacher Award from Department of Higher Education, Government of Andhra Pradesh, State Awards to Meritorious Teachers-2003, "Marlyn & John Zeigler Prize" for applied Geology, Andhra University, Visakhapatnam, "Best Habitation Award" during Janmabhoomi and Micro planning. He has two books under his credit, as course writer for "Environmental Geology, published by Telugu Academy, Hyderabad and Practical manual writer "Structual Geology and Paleontology" published by Dr. B.R.Ambedkar Open University, Hyderabad. He is expert in teaching and learning process by having extra and co-curricular activities like NSS Programme Officer, Janmabhoomi District Resource Person, Dr. B.R. Ambedkar Open University, Directorate of Distance Education - Coordinator, Sumabala Reddy Computer Centre Incharge, UGC Coordinator, NAC Coordinator, IQAC Coordinator, DCEDRC - Member Secretary, Academic Coordinator, Autonomous Coordinator, Life Member Indian Society for Technical Education. Government appointed him as Executive Council Member, Adikavi Nannayya University, Rajamahendravaram, (HIGHER EDUCATION (UE) DEPARTMENT) G.O.MS.No. 14, Dated: 22-02-2016.

Executive Editor

Dr. P. Hari Ram Prasad, M.A., Ph.D.
Head, Dept. of Hindi &
Research Director,
Aadikavi Nannaya University

Dr. P. Hari Ram Prasad has received his bachelor degree (B.Sc.) from Govt. College (Autonomous) Rajahmundry, M.A. Hindi & Ph.D. from Andhra University, Qualified UGC SET Examination in the year - 2012 from Osmania University. He was participated and presented papers National & International Level Seminars and published morethan 20 Research Articles both National & International Magzines. BOS Member and Research Director of Aadikavi Nannaya University, Rajahmahendravaram.

He has published morethan 15 Research articles in both National and International Journals and edited 5 books i.e. 1) Tulanatmaka Sahitya : Hindi our Anya Bhasha Yee, 2) Sahitya, Samaja Tatha Samskruthi Ke Samakaleena Prashna, 3) Hindi-Telugu Sahitya Ke Vividha Vimarsha, 4) Hindi, Telugu Dalitha Atmakadha omka Tulanatmaka Adyayan, 5) Ramacharithamanas me Vaijnanika Drustikoon. And also conducted 5 National and 2 International Seminars successfully. He has been working as incharge, Dept. of Hindi, since 2014, in his able leadership established the PG Department (Hindi) in P.R. Govt. College (Autonomous), Kakinada.

He has received many awards like I.U.F.F. Research Award from Commissioner of Collegiate Education, Govt. of A.P in 2014., Received Rastriya Siksha Ratna Award from M.V.L.A. Trust, Mumbai in 2016, Received Santhabai Memorial Award from Tejaswi Astitwa Foundation, NewDelhi in 2017 and recently received Sarvepalli Radhakrishnan National Best Teacher Award from Philanthropic Society of India. He has expertise in the field of Literature and got many laurels for his contribution in the area of Indian Language and Culture.

Yogyatha International
Research Journal
Subscription Rates in India
Institutions ₹ 1.000.00
Individuals ₹ 1.000.00
All Ohter Countries (Air Mail) : $ 175.00

Yogyatha Publications
Dr. D. Satyalatha
D.No. 39-14-30, Mona Hights, Madhavadhara,
Visakhapatnam - 530 007, A.P. India. Cell : 98859 10709
email : yogyatha.jri@gmail.com, satyalathanalla@gmail.com